अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

ऐसा हो व्यवहार, परिवार में रहे सुख का पारावार

-परस्पर सौहार्द और सम्मानपूर्ण व्यवहार से परिवार बन सकता है सुखी

-अणुव्रत चेतना दिवस पर आचार्यश्री ने साधुओं को भी अणुव्रती बनने की दी पावन प्रेरणा

-'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' में त्रिपृष्ठ भव का आचार्यश्री ने किया सविस्तार वर्णन

11.09.2018 माधावरम, चेन्नई (तमिलनाडु): ¬¬आदमी के जीवन में व्यवहार का भी कितना महत्त्व होता है। कोई आगंतुक आ जाए तो उसका सम्मान करने का प्रयास करना चाहिए। आगंतुकों का यथोचित्य सत्कार व सम्मान करने का प्रयास करना चाहिए। समुचित सम्मान का व्यवहार हो, उदारतापूर्ण व्यवहार हो और परस्पर सहयोग की भावना हो तो जीवन कितना अच्छा हो सकता है।

आज परिवारों कितना तनाव और भाई-भाई में ही टकराव की स्थिति हो सकती है। परिवार में कलह, भ्रूणहत्या, दहेज, लोभ, तलाक आदि जैसी घटनाओं पर विराम लगाने के लिए परिवार के सभी के प्रति समुचित सम्मान, उदारतापूर्ण व्यवहार और परस्पर सहयोग और सौहार्द की भावना हो तो परिवार में बिखराव नहीं प्रेम हो सकता है। परिवार में सुख-शांति का माहौल कायम हो सकता है। जहां परस्पर सहयोग, व्यक्ति स्वार्थ की बात न हो उस परिवार में मानों सुख का पारावार आ सकता है। वह सबसे सुखी परिवार हो सकता है। उक्त व्यवहार कुशलता की बातें जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने माधावरम् में बने भव्य 'महाश्रमण समवसरण' में उपस्थित श्रद्धालुओं को बताईं।

पर्युषण पर्वाधिराज के पांचवें दिन 'महाश्रमण समवसरण में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने अपने मुख्य मंगल प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के अंतर्गत त्रिपृष्ठ भव की घटनाओं का सविस्तार वर्णन करने के पश्चात् ने कहा कि आज अणुव्रत चेतना दिवस है। माना कि महाव्रत का बहुत ऊंचा राजमार्ग है। इसपर चलना सबके लिए मुश्किल हो सकता है। इसलिए सामान्य आदमी छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा भी अपने जीवन को आध्यात्मिक गति प्रदान कर सकता है। इन व्रतों को स्वीकार करने के लिए किसी का जैनी होना ही अनिवार्य नहीं, बल्कि कोई घोर नास्तिक हो तो भी वह इन व्रतों का अनुपालन करे तो उसके जीवन में व्यापक परिवर्तन आ सकता है।

आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत केवल गृहस्थ ही नहीं साधु भी महाव्रतों के साथ-साथ अनेक छोटे-छोटे व्रत स्वीकार कर अपनी साधना को और अधिक पुष्ट बना सकते हैं।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के मध्य ही अपने द्वारा फरमाए गए मंगल प्रवचनों से आधारित सवालों के माध्यम से बाल साधु-साध्वियों से प्रश्न किए और उन्हें उसके समुचित समाधान प्राप्त किए तो मानों एक आध्यात्मिक कक्षा आचार्यश्री ने प्रवचन पंडाल में आरम्भ कर दी। आचार्यश्री की प्रेरणा जहां बाल साधु-साध्वियों के व्यवहार कुशलता और अधिक प्रगाढ़ करने वाली थी तो श्रद्धालुओं के लिए यह दृश्य मोहक बना हुआ था। वे इससे अपने जीवन में स्वयं भी व्यवहार कुशल बनने की प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में श्री विनोद छल्लाणी ने 36, तो श्रीमती रमाई बांठिया ने 28 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इसके साथ अनेकानेक लोगों ने अठाई व अनेक तपस्याओं का प्रत्याख्यान आचार्यश्री के श्रीमुख से स्वीकार किया।